ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 92-93**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

भारतीय समाज में वृद्धजनों की स्थिति का अध्ययन– एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 पुष्पा वर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर–समाजशास्त्र विभाग, सो0सि0जीना वि0वि0 परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) भारत

Received-18.10.2024, Revised-25.10.2024, Accepted-30.10.2024 **E-mail : pptyagi82@gmail.com**

सारांशः ***प्रस्तुत शोध पत्र में समाज में वृद्धों की समस्याओं की स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है, जिसमें दिल्ली के फरीदाबाद जिला के एक क्षेत्र को चुनकर समाज में वृद्धों की समस्याओं का अवलोकन किया गया है तथा 19 वृद्ध लोगों का साक्षात्कार के माध्यम से तथ्य एकत्रित किए गए है। भारत वर्ष में वृद्ध व्यक्तियों को आदर एवं सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है। सामान्यतः इन व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं समस्याओं का समाधान भारतीय संयुक्त परिवार में होता रहा है परन्तु आद्यौगीकरण के परिणाम स्वरूप इस देश में संयुक्त परिवार का धीरे–धीरे विघटन हो रहा है तथा उसके स्थान पर एकल परिवार का वर्चस्व बढ़ रहा है। इसके साथ–साथ व्यक्तिवादी, भौतिकवादी एवं सुखवादी मूल्यों के बढ़ने के कारण वृद्धों की उपेक्षा की जानी लगी इसके अतिरिक्त कुछ वृद्ध निराश्रितता की समस्या से भी ग्रस्त होते जा रहे है। जिनमें आर्थिक समस्याओं स्वास्थ्य एवं चिकित्सकीय समस्याओं पारिवारिक एवं भावनात्मक समस्याओं अवासीय समस्याओं इत्यादि का उल्लेख किया गया है। शोध के माध्यम से अनुसंधानकर्ता के द्वारा पूछा गया समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त ही गई है। प्राप्त तथ्यों को वर्गीकृत करके विश्लेषित कर निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द– भारतीय समाज में वृद्धजन,अवलोकन, साक्षात्कार, आदर एवं सम्मान, समाधान, भारतीय संयुक्त परिवार

प्रस्तावना– वृद्धों की समस्या को समझने के लिए समसामयिक समाज में परिवार की भूमिका को समझना आवश्यक है। आज वृद्धों के प्रति वह नजरिया नहीं है, जो पहले था। बच्चे अपने ही माता–पिता को वृद्ध अनाथालय में छोड़ दे रहे, जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। विविध प्रकार के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि वृद्धों की देखरेख के लिए परिवार से बढ़कर कोई दूसरा संगठन नहीं है, परन्तु परिवर्तित परिस्थितियों में विविध प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक वैज्ञानिक कारकों के परिणाम स्वरूप आज परिवार अपनी वह भूमिका प्रतिपादित नहीं कर पा रहा है जिसकी अपेक्षा है। जहां तक वृद्धों के देख–रेख का प्रश्न है, परिवार में वृद्धों का स्थान केन्द्रिय है। इसके अन्तर्गत वृद्धों को सुचारू रूप से देख–रेख करने के लिए बल दिया जाता है। परिवार के अन्तर्गत की युवा वर्ग को वृद्धजनों की देख–रेख का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्वों को सौंपा जाता है।

इस प्रकार यदि परिवार का युवा वर्ग वृद्धों के खान–पान मनोरंजन, आध्यात्मिकता के आधार पर बढ़ता रूझान आदि के बारे में सक्रिय नहीं रहता, ऐसी स्थिति में हम वृद्धों के मंगलमय दीर्घ जीवन की बहुत अधिक अपेक्षा नहीं कर सकते है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिर्पोट (1) में भारत में वृद्धों की अनेक समस्याओं पर अनेक तथ्य दिए गए है। इसमें सर्वाधिक चिंतनीय मुद्दा दुर्व्यवहार का है। एल्डर एब्यूज इन इंडिया, डब्लीयुएचओ कंट्री रिर्पोट 2002(2) में भारत में वृद्धों की स्थिति पर चर्चा करते हुए कहा गया है कि अपमान, उपेक्षा, दुर्व्यहार, प्रताड़ना एवं अकेलेपन के कारण भारत के अधिकांश बुजुर्ग वृद्धावस्था को एक बीमारी मानने लगे हैं। स्वास्थ्य सम्बंधी अनेकों कार्यक्रमों की बदौलत वृद्धजनों में रहन–सहन उनके स्वास्थ्य एवं उनकी औसत आयु में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

अध्ययन के उद्देश्य– प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत शोध के पीछे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है, क्योंकि उद्देश्य के बिना शोध दिशाहीन होता है।

1. वृद्ध लोगों की पारिवारिक एवं आर्थिक समस्या का अध्ययन।
2. परिवार के सदस्यों और अन्य रिश्तेदारों द्वारा की जाने वाली देखभाल के सम्बन्ध में वृद्धो के विचारों को जानना।
3. वृद्ध लोगों के विभिन्न समास्याओं के कारणों के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
4. वृद्ध लोगों की जीवन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
5. समाज में वृद्धों के देखभाल के प्रति लोगों में जागरूकता लाना।

अध्ययन पद्धति एवं उपकरण– प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको पर आधारित है। प्राथमिक समंको के संकलन के लिए समय में से संगणना विधि द्वारा दिल्ली के फरीदाबाद ब्लाक के वृद्धो की स्थिति के बारे में नगरीय समाज में वृद्धो की समस्याओ के अन्तर्गत जानकारी प्राप्त करने के लिए 19 सूचनादाताओं से साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन आदि पद्धतियों का प्रयोग किया गया तथा सूचनाएं संकलित की गई। संकलित सूचनाओं का वर्गीकरण व विश्लेषण कर वैज्ञानिक निष्कर्षो के आधार पर निकाला गया है। प्रस्तुत शोध में आवश्यकतानुसार इंटरनेट का भी सहारा लिया गया है।

समाचार पत्र–पत्रिकाओं, लेखों, सरकारी रिकार्डो तथा जनगणना आदि विभागों से भी द्वितीयक सामग्री संकलित की गई है।

शोध क्षेत्र का संक्षिप्त विवरण– प्रस्तुत शोध में वृद्धजनो की समस्या की स्थिति के बारे में अध्ययन किया गया है दिल्ली राज्य के फरीदाबाद क्षेत्र के वृद्ध आश्रम में रहने वाली वृद्ध व्यक्तियों की समस्याओं के बारे में अध्ययन किया गया जो दिल्ली से 30 किलोमीटर दूर फरीदाबाद में स्थित है, जोड ब्लाक के अन्तर्गत आता है। इस आश्रम में वृद्धाजनों की कुल संख्या 19 है वृद्धजनों का चयन संगणना पद्धति के द्वारा किया गया है।

तथ्यो का विश्लेषण– प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों के संकलन के पश्चात् तथ्यों के आधार पर वर्गीकृत, सारणीय कर विश्लेषण किया गया है। वृद्धजनों में महिला एवं पुरूष दोनों ही पाए गए है।

सारणी कम –01 (सूचनादाताओं की लैंगिक स्थिति को दर्शाया गया)

क्रम सं0	वृद्धजनो की संख्या		प्रतिशत (%)
01	महिला	08	42.10
02	पुरूष	11	57.89

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में कुल वृद्ध पुरूष 57.89 प्रतिशत है तथा कुल वृद्ध महिलाओं का 42.10 %है।

सारणी क्रम सं0– 02 सूचनादाताओं की वृद्ध व्यक्तियों का शिक्षा स्तर

क्रम सं0	शिक्षित वृद्ध व्यक्ति	प्रतिशत (%)
01	12 शिक्षित	63.15
02	11 अशिक्षित	57.89
	19	

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि कुल शिक्षित वृद्ध जनों की 63.15 प्रतिशत है तथा अशिक्षित वृद्ध जनों की 57.89 प्रतिशत है।

सारणी क्रम सं0 –03 उत्तरदाताओ के आयु के आधार पर अध्ययन को दर्शाया गया है

क्रम सं0	आयु	सं0	प्रतिशत (%)
01	60–65	05	26.3
02	65–70	09	47.36
03	70–80	03	15.78
04	80 से ऊपर	02	10.52
		19	100.00

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं के आयु के आधार पर अध्ययन 80 से ऊपर के सबसे कम आयु वर्ग के 10.52 वृद्ध व्यक्ति है तथा सबसे अधिक 65–70 में 47.36 प्रतिशत वृद्ध व्यक्ति पाए गए है। 60–65 वर्ग के आयु वर्ग 26.3 प्रतिशत तथा 70–80 वर्ग के लोग की 15.78 प्रतिशत पायी गयी है।

सारणी क्रम सं0 –04 उत्तरदाताओं की पारिवारिक स्थिति

क्रम सं0	परिवारिक स्थिति	खराब	अच्छी	प्रतिशत (%)
01	09	–	✓	1.71
02	04	✓		0.76
03	06	–	✓	1.14
योग	19			3.16

उत्तरदाताओं की पारिवारिक स्थिति सारणी के माध्यम से स्पष्ट किया गया कि 1.71 प्रतिशत परिवारों की स्थिति अच्छी है। तथा 0.76 परिवारों की स्थिति खराब तथा 1.14 परिवारों की स्थिति ठीक–ठाक है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि वृद्ध जनों की अनाथालय जाने की संख्या अधिक है जिसमें से परिवार के सदस्य अपने माता–पिता को अनाथालय छोड़ देते है और अपने विदेश चले जाते है। पैसा तो भेजते है पर मिलने नहीं आते। किसी प्रकार की त्रुटि हो जाने पर भी अनाथालय के संचालक उनकी किया–करम करते है, लेकिन उनके बच्चे नहीं आते।

निष्कर्ष– वृद्धजनों का परिवार स्वंय में एक जटिल समस्या है जिसे संकलित तथ्यों के आधार पर विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है कि परिवार के अन्तर्गत वृद्धजन न होने की स्थिति में विविध प्रकार के तनाव की स्थितियों का सृजन करते है जिससे वे स्वंय तो प्रभावित होते है, परिवार के सदस्य भी उससे प्रभावित होकर उसी के अनुरूप व्यवहार करते है। परिवार के सदस्यों के व्यवहार एवं विचार के मूल्यांकन के सन्दर्भ में तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि परिवार के सदस्य अपने वृद्धजनों को अनाथालय में छोड़ देते है। समुदाय और परिवार कल्याण सेवाएं स्वंय सेवी संगठनों की सहायता से वृद्ध लोगों के किसी आय का साधन एवं राज्य सरकारों द्वारा दी गई वृद्धावस्था पेंशन की सहायता निरंतर दी जाती रहनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बंदनारानी द्वारा 1988 में वृद्धजन संस्थाए तथा प्रध्याक्षाएं , समाजशास्त्रीय .परिप्रेक्ष्य में जनपद बिजनौर।
2. सिन्हा सुमनरानी ने 2007 में वृद्धजनों का समाजशास्त्रीय अध्ययन इलाहाबाद के सेवानिवृत्त की सम्सयाओं पर ।
3. डा0 मुकर्जी आर0 के0 (1995) सामाजिक सर्वेक्षण एवं शोघ प्रकाशकः धीरज धुक्स 355, गांधी मार्ग मेरट पृ0 101.
4. डा0 बघेल डी0 एस0 (1997) सामाजिक अनुसंधान, गायत्री पब्लिकेशन।

*****